NP – 031

II Semester B.A./B.F.A./B.S.W./B.Music/B.V.A./B.A. (Honours) Examination, Sept./Oct. 2022
(NEP) (2021-22 and Onwards)
HINDI LANGUAGE
Paper – II : Upanyas, Prayojanmulak Hindi Aur Sankshepan

Time : 2½ Hours | Max. Marks : 60

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या **एक** वाक्य में लिखिए : **(10×1=10)**

1) 'डाक बंगला' उपन्यास में किस प्रदेश की कहानी हैं ?
2) किसके कानों में घोडों के टापों की आवाज गूँजती हैं ?
3) लेखक ने हर जिन्दगी की तुलना किसके साथ की हैं ?
4) पहलगाम कहाँ हैं ?
5) चंदीगढ़ में किसे नौकरी मिली थी ?
6) इरा की सहेली का नाम लिखिए ।
7) रावलपिंडी में शीला कहाँ रहती थी ?
8) चंद्रमोहन के कितने बच्चे थे ?
9) डिबरूगढ़ किस राज्य में हैं ?
10) ''डाक बंगला'' उपन्यास के लेखक कौन हैं ?

St Claret College LIBRARY Bangalore-560013

II. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : **(2×7=14)**

1) ''उसे इस बात का भी ख्याल नहीं कि रात बारिश हो चुकी हैं और घोडा फिसल सकता है''।
2) ''मेरी जिन्दगी बगैर मंजिलों के चलती रही, मैं चिरपथिक हूँ, मेरा पड़ाव कही नहीं हैं ।''
3) ''आज मैं जो थोडी सी आजाद हूँ..., उसी के बल पर हूँ, नहीं तो लोग मुझे खा गए होते ।''

III. 'डाक बंगला' उपन्यास के आधार पर इरा के चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए । **(1×16=16)**

अथवा

''पुरुष वर्ग का नारी के प्रति शक किया जाना कितना उचित है ? '' उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

P.T.O.

IV. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : **(1×5=5)**

1) सोलंकी ।

2) विमल ।

V. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **(2×4=8)**

1) प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

2) प्रयोजनमूलक हिन्दी की परिभाषा लिखिए ।

3) प्रयोजनमूलक हिन्दी की परिभाषा लिखते हुए, उसके क्षेत्र पर प्रकाश डालिए ।

VI. इस गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षेपण कीजिए : **(1×7=7)**

मृत्यु की समस्या मानव-अस्तित्व और मानव खोज की सबसे प्रमुख समस्या है जीवन, ज्ञान, संघर्ष और फैण्टेसी, इन सबके मूल में मृत्यु की भावना अथवा मृत्यु का खौफ काम करता रहता है । मानव अस्तित्व की सीमारेखा इसी ने स्थापित की है । ज्ञान की निरर्थकता, आनन्द और रस की एकरसता, मानव सम्बन्धों का अप्रत्यक्ष उपहास और अस्तित्व के प्रति गहरा अविश्वास, इन सबके भीतर मृत्यु का खौफ काम करता रहा है । जीवन और जीवन के मूल्यों के रूप में किसी अन्तिम वस्तु को इस सीमा के ऊपर स्थापित करने और उपलब्ध करने की व्याकुलता ही चिन्तन प्रक्रिया को जन्म देती रही है क्योंकि मृत्यु एक भयंकर अर्थहीनता को जन्म देती है । सम्पूर्ण मानव चिन्तन और मानव अस्तित्व की निरर्थकता को संकेतित करती है । अत: मृत्यु मानव चिन्तन का प्रमुख विषय है ।